

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ भूसूक्तम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ भूसूक्तम् ॥

भूमिर्भूम्रा द्यौर्वरिणाऽन्तरिक्षं महित्वा।
उपस्थे ते देव्यदितेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायाऽऽदधे।
आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमी दसनन्मातरं पुनः।
पितरं च प्रयन्थसुवः।
त्रिगुं शद्धाम विराजति वाक्पतङ्गाय शिश्रिये।
प्रत्यस्य वह द्युभिः।
अस्य प्राणादपानत्यन्तश्चरति रोचना।
व्यख्यन् महिषः सुवः।
यत्त्वां क्रुद्धः परोवपं मन्युना यदवर्त्या।
सुकल्पमग्ने तत्तव पुनस्त्वोदीपयामसि।
यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमनु दध्वसे।
आदित्या विश्वे तद्देवा वसवश्च समाभरन् ॥ 1 ॥

मेदिनी देवी वसुन्धरा स्याद्वसुधा देवी वासवी।
ब्रह्मवर्चसः पितृणाग् श्रोत्रं चक्षुर्मनः।
देवी हिरण्यगर्भिणी देवी प्रसूवरी।
सदने सत्यायने सीद।
समुद्रवती सावित्री हनो देवी मह्यङ्गी।

[समुद्रवती सावित्री हनो देवी मह्यगी।]

महोदरणी महोध्यतिष्ठाः शृङ्गे शृङ्गे यज्ञे यज्ञे विभीषिणी।

[महीधरणी महोव्यधिष्ठाः शृङ्गे शृङ्गे यज्ञे यज्ञे विभीषिणी।]

इन्द्रपत्नी व्यापिनी सुरसरिदिह।

वायुमती जलशयनी श्रियंथा राजा सत्यन्धो परिमेदिनी।

श्वोपरिधत्तं गाय।

विष्णुपत्नीं महीं देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।

लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभाम्।

ओं धनुर्धरायै विद्महे सर्वसिद्ध्यै च धीमहि।

तन्नो धरा प्रचोदयात् ॥ 2 ॥

शृण्वन्तिश्रोणाममृतस्य गोपाम्।

पुण्यामस्या उपशृणोमिवाचम्।

महीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्।

प्रतीचीं मेनाग्ं हविषा यजामः।

त्रेधा विष्णुरुगुगायो विचक्रमे।

महीं दिवं पृथिवीमन्तरिक्षम्।

तच्छ्रोणैति श्रवं इच्छमाना।

पुण्यग्गुश्लोकं यजमानाय कृण्वती ॥ 3 ॥

॥ इति भूसूक्तं समाप्तम् ॥